दुखी होकर मैं आया हूं बिहारी
सुनों अब प्रेम से विनती हमारी
सुनता हूं कि है आदत तुम्हारी
गरीबों पर दया की दृष्टि डारी
मेरे ऊपर भी कर दो नाथ दया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 1

यह दुनिया है दुख का समंदर
हैं इसमें ग्राह कामादिक भयंकर
पड़ा हूं नाथ मैं भी इसके अंदर
किनारा दूर है लिपटे हैं अजगर
मैं घबराया हूं अब इनका सताया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 2

मैं डूबा हूं मुझको तुम बचालो
शरण अपनी स्वामी मुझको बुला लो
करो कृपा मुझे हृदय लगा लो
मैं गफ़लत में पड़ा हूं अब जगा लो
कहीं मैंने जो थल बेड़ा न पाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 3

हज़ारों ख्वाहिशों ने मुझकों घेरा
ज़बुं हैं हाल अब दुनिया में मेरा
क्रोध और काम ने कर दिल में डेरा
तेरी जानिब से मेरे दिल को फेरा
न की कुछ बंदगी और ने गुण गाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 4

लगे जंजाल मेरे पीछे हैं ऐसे
के गज को ग्राह ने घेरा था जैसे
शरण जब तेरी आया वो भय से
किया उद्धार स्वामी आप रहसे
मेरी भी सुध लो ओ जादव राया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 5

पड़ी थी जो अहिल्या श्राप मारी
दया से अपनी उसको पार उतारी
है कर्मों का मुझे भी ताप भारी
उतारो मुझको भी बांके–बिहारी
मुझे यह नाच कर्मों ने नचाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 6

वो हिरणाकुश जो था दुष्ट भारा
श्री प्रहलाद को मारन बिचारा
वोह था प्रहलाद इक भक्त प्यारा
जिसको कृपा दृष्टि से निहारा
मुज्ज़सिम पाप का मैं हूं बताया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 7

यह कामादिक सताते हैं कुटुम्बी
नहीं मिलती है फ़ुर्सत कोई दम भी
पड़ा संकट में हूं है सोचो ग़म भी
मेरा सर नीचा है आती शरम भी
मैं चरणों में तुम्हारे सर निवाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 8

हुआ जब द्रौपदी को दुख का कारण
लगा वोह चीर दुष्ट उसका उतारन
वोह था बलवान हाथी–सा दुःशासन
गया वो हार कर के ज़ोरो तन–मन
तुम्हीं ने चीर को उसके बढ़ाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 9

वो सदना ज़ात का था कसाई
जो लौ चरणों से तेरे आ लगाई
तो इस संसार–सागर से रिहाई
तेरी कृपा से स्वामी उसने पाई
बचा लो मुझे भी सबको बचाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 10

वोह गंगा वैश्या सुंदर थी नारी
के जिसने उम्र पापों में गुज़ारी
शरण आयी और तुमको पुकारी
दया की दृष्टि से तुमने निहारी
मिटे सब पाप उसने स्वर्ग पाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 11

वो दुर्योधन का नौकर नंदा नाई
जो चरणों से तुम्हारे लौ लगाई
चरण दबाता था वो नित जाई
किसी दिन फुर्सत न उसने पाई
चरण खुद तुमने बदले में दबाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 12

वो धन्ना जाट पर की मेहरबानी
बिना बोए बिना देने के पानी
हरी की खेती के सब ने जानी
नहीं दाता तुम्हारा कोई सानी
हुई कृपा तुम्हारा धाम पाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 13

वोह सबरी भीलनी के बेर भाए
रुच–रुच के तुमने नाथ खाए
मुज्ज़सिम प्रेम से वोह थे बनाए
सदा तुम भक्त हितकारी कहाए
न भोग ऐसा कभी मैंने लगाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 14

दिखाया तुमने भक्ति का तमाशा
उभारा तुमने उसको बेतहाशा
रही मन में न बाकी कोई आशा
दिया चरणों में अपने नाथ बाशा
खिलाकर फल तुम्हें फल उसने पाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 15

ध्रुव अज्ञान बालक था निराला
लगी जब लौ तो कुछ देखा न भाला
बनों में आप अपने को निकाला
प्रण भक्ति का अपनी तुम ने पाला
उतारा पार और राजा बनाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 16

सुदामा था तुम्हारा मित्र ज्ञानी
न कोई मुफ़लिसी में उसका सानी
सरापा प्रेम ही था वोह प्राणी
कहे से धर्म–पत्नी के यह ठानी
तुम्हारे पास दर्शन को वोह धाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 17

कहीं से मांगकर चावल के दाने
तुम्हारी भेंट को थे उसने आने
तुम्हारे प्रेम में मन अपना साने
चला इस तरह वो तुमको रिझाने
वोह ऐसी तुच्छ–सी सौग़ात लाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 18

सुना तुमने सुदामा मित्र आए
तो तुम जाकर उन्हें डयोढ़ी से लाए
तवाज़ा की बहुत और सर नवाए
चरण धोकर भवन अपने सिंचाए
पिया चरनामृत आंखों लगाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 19

यह बोले प्रेम से एः मित्र मेरे
बहुत दिन बाद पाए दर्शन तेरे
कभी मेरी तरफ़ को तुम न हेरे
करी कृपा मेरे दिन आज फेरे
जो घर बैठे तुम्हारा दर्शन पाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 20

मेरी भाभी ने जो सौग़ात भेजी
मुझे ए मित्र क्यों अब तक नहीं दी
मैं हूं टुक प्रेम का भूखा सुनो जी
बग़ल से पोटली यह कह के खींची
और उसने शर्म से उसको दबाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 21

इधर तुम और उधर वो मित्र ज्ञानी
लगे कपड़े को करने खींचा–तानी
फटा कपड़ा के थी चादर पुरानी
ज़मीं पर गिर पड़ी मुफ़लिस निशानी
उठाकर एक एक तंदुल तुमने खाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 22

दो मुठ्ठी जबके चावल कर चुके ख़त्म
किया फ़िर तीसरी मुठ्ठी का अज़्म
तो पकड़ा हाथ रुकमन जी ने पुर ग़म
कहा चरणों की हैं दासी भी इक हम
अकेले ख़ाना तुमको कैसे भाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 23

हंसे तुम और कहा रोक कर हाथ
मज़ा क्या जाने इसका स्त्री ज़ात
मगर समझा हूं जो कुछ भी है बात
चतुर हो बड़ी लो तुम भी यह भात
मुझे चतुराई से तुमने थकाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 24

करामात तुमने अपनी यह दिखाकर
सुदामा को किया खुश यूं रिझाकर
न एहसान उस पर कोई भी जताकर
दिया सब कुछ मगर उससे छुपाकर
गया वापिस वो जिस सूरत से आया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 25

बिदुर का साग बासी जाज़े उल्फ़त
वो खाया तुमने पाई उस में लज्ज़त
वो दुर्योधन जो था सर–श्यार नख़्वत
त्यागी तुमने इकलख़्त उसकी दावत
मोहब्ब्त के बिना उसको न भाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 26

वोह मीराबाई ने दिल को लगााकर
रिझाया तुमको गुण हर वक़्त गाकर
दिया राजा ने जाम–ए–ज़हर लाकर
जब उसने पी लिया तुमको मनाकर
तो तुमने ज़हर का अमृत बनाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 27

वोह छैया भक्त की थी छान छाई
वोह कुब्जा बांदी को सुंदर बनाई
जटायु गिद्ध ने भक्ति दिखाई
लड़ा रावण से जब सीता चुराई
उन्हें भी धाम को अपने पठाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 28

सुनी सुग्रीव की जब रास्त बाज़ी
दिखाया शब ए बन्दा नवाज़ी
जो देखी बाली की दस्ते दराज़ी
बचाया उससे बख़्शी सरफ़राज़ी
बिठाकर तख़्त पर रुत्बा बढ़ाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 29

विभीषण ने ख़बर आमद की पाई
करी चरणों में आकर चव्वे साई
तो तुमने दयालुता अपनी दिखाई
वहीं लंका की बख़्शीश बादशाही
बदस्ते खास ताज उसको पहनाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 30

वो नरसी भक्त की अद्भुत कहानी
लुटाकर धन हुआ अवधूत ज्ञानी
हंसी चाही थी समधी ने करानी
मग़र महिमा न उसने नाथ जानी
बल आख़िर खूब पछताया लजाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 31

सलोचन ने जो सुन पाई बड़ाई
पति का सर लेने को वोह आई
तुम्हारे दिल को विनती उसकी भाई
तो तुमने प्यार से उसको बुलाई
वहीं शौहर का उसके सर मंगवाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 32

कहा उससे शब्द शीर–ए–ज़बानी
करुं ज़िन्दा इसे बा मेहरबानी
करो लंका में जाकर राजधानी
नहीं होगी अब्द तक कुछ भी हानि
करिश्मा मेहरबानी का दिखाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 33

सलोचन ने कहा यह जोड़कर हाथ
न वक़्त ऐसा मिलेगा फ़िर कभी नाथ
जिया लाखों बरस आख़िर यही बात
करो कृपा मुझे दो इसका अब माथ
मुझे भी चाहिए तन यह जलाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 34

कहा तुमने हंसे गर सर सरारी
परीक्षा सत्य की हो जाए तुम्हारी
सलोचन बोली सर से हो दुखारी
पिया तुम लाज अब रख लो हमारी
हंसा सर तुमने उसको आज़माया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 35

हुआ राजा हरीशचंद्र ऐसा दानी
के विश्वामित्र को दी राजधानी
मुसीबत हर तरह दिल पर ठानी
कुंवर रोहिताश बेचा और रानी
आख़िर खुद को भंगी के बिकाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 36

वोह विश्वामित्र ने फिर सांप बन कर
डसा रोहिताश को गुलशन में जा कर
तो रानी फिर कफ़न उसको पहना कर
जलाने लाश को लाई उठाकर
खड़ा मरघट में राजा उसको पाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 37

कहा राजा ने कर लाकर मुझे दो
खुशी से फिर जला दो तुम पिसर को
नहीं पैसा भी बोली रानी रो–रो
तुम्हारा है यह लड़का आज्ञा दो
वो रोई और राजा को रुलाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 38

मगर आखिर को ढारस दिल में धारा
कहा शरमा के उस से प्यारी तारा
नहीं मर्ज़ी में कुछ ईश्वर की चारा
ज़माना है बहुत नाज़ुक हमारा
यह सब तकदीर ने चक्कर चलाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 39

मुनासिब अब नहीं है आहो ज़ारी
ख़बर परमात्मा लेंगे हमारी
रुपया अब सवा दो लाके प्यारी
हुई सत्य धर्म से हमको लाचारी
बिना कर के नहीं चाहिए जलाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 40

गई रानी कहीं दामों की ख़ातिर
तो विश्वामित्र ने फिर मौका पाकर
वहां के सेठ का लड़का चुराकर
किया कत्ल उसको जंगल में जाकर
फिर उसकी लाश को मरघट में लाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 41

जहां रोहिताश का लाश्य पड़ा था
वहीं पर लड़का उसने ला के रखा
किया फिर शहर में यह जा के चर्चा
कहीं से इक आई डायन इसजा
यहां उसने कई बच्चों को खाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 42

सुना राजा ने जब यह हाल सारा
तो उसने अपने दिल में यह विचारा
पकड़ कर चहिए डायन को मारा
गर न शहर उजड़ेगा हमारा
पकड़ कर उसने रानी को मंगाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 43

दिया यह हुक्म अफ़सर को बुलाकर
करो कत्ल इसको जंगल में जाकर
वहीं अफ़सर ने उसका हुक्म पाकर
खड़ा उसको किया मरघट में लाकर
और उसको हुक्म राजा का सुनाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 44

कहा यह कलवा भंगी ने के जाओ
हरीशचंद्र इसका सर फौरन उड़ाओ
न हरगिज़ अपने दिल में रहम लाओ
है डायन इसकी अब हस्ती मिटाओ
करो इक आन में इसका सफ़ाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 45

हरीशचंद्र उठा ले तलवार भारी
कहा तारावती से प्राण–प्यारी
तुम अब बांध दो आंखें हमारी
उड़ानी है हमें गरदन तुम्हारी
लिखाकर यही किस्मत में लाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 46

किया मंजूर यह तारावती ने
वहीं दी बांध फिर पट्टी खुशी से
लगाया ध्यान फिर अपना हरि से
कहा फिर कत्ल को अपने पति से
जो हाथ ऊपर को राजा ने उठाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 47

जो देखा देवतों ने ज़ुल्म का तोर
मचाया मिलकर हाहाकार का शोर
सुनी तुमने जो यह फ़रियाद पुरज़ोर
किया तुमने अपने दिल में यह ग़ौर
फिर अपने भक्त को जाकर बचाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 48

चतुर्भुज रूप धर फिर वहां पर आए
पकड़ राजा को छाती से लगाए
बचन फिर दयालुता के यह सुनाए
महाधन्य है तुम्हें राजा लजाए
तो सर राजा ने चरणों में झुकाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 49

कहा राजा से तुमने मुस्कुराकर
अयोध्या में करो अब राज जाकर
वहीं फिर दोनों लड़कों को जिलाकर
दिया वरदान मनचाहा रिझाकर
न कुछ माया का तेरी पार पाया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 50

तुम्हारे गुण कहां तक नाथ गाऊं
नहीं कुछ पार क्यों कर भेद पाऊं
कहां जाऊं बिथा किसको सुनाऊं
पड़ा हूं संकट में क्यों कर निभाऊं
रखो चरणों का अपने मुझ पर साया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 51

मैं नीच बुद्धि हूं तुम मुझको संभालो
शरण में आ गया मुझको निभालो
मुझे संसार–सागर से निकालो
तुम अपने रूप में मुझको मिला लो
न अब बलदेव को समझो पराया
दुखी होकर शरण मैं तेरी आया। 52

संग्रहकर्ता :
स्वर्गीय पडित मुंशीराम जांगिड़

ग्राम : बहादरपुर
डाक : खिर्वा जलालपुर
तहसील व थाना : सरधना
जनपद : मेरठ (उ.प्र.) भारत

2014

प्रेरणास्त्रोत :

श्री घनश्याम दत वातस्य

पताः 326, पुरानी गोविन्द पुरी, कंकर खेड़ा, मेरठ (उ.प्र.)

संपर्कः 8954333363

शरण मैं तेरी आया

<u>**रचनाकार**</u>

स्व. पंडित बलदेव सहाय
एवं
स्व. पंडित हरदेव जांगिड़